International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 01(III), January - March, 2023, pp. 164-169

भारत में कृषि पर आधारित लघु एवं मध्यम उद्योगों की भूमिकाः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

नरसिंह भिड़े*

सार

भारत में कृषि पर आधारित लघु एवं मध्यम उद्योग से उत्पादन, प्रतिव्यक्ति की आय और राष्ट्रीय आय में वृद्धि हुई हैं। तथा इन उद्योगों का भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान हैं। कृषि पर आधारित लघु एवं मध्यम उद्योग भारतीय कृषक को सहायक उद्योग के रूप में कार्य करते हैं। इन उद्योग की स्थापना करने में कम पूंजी लगती हैं। और कृषि से कच्चा माल ग्रामीण कृषको से आसानी से प्राप्त हो जाता हैं। साथ ही इन उद्योगों के लिए छोटे–छोटे ऋणो की जरूरत होने पर शासन की योजनाओं के माध्यम से सरलता से ऋण उपलब्ध हो जाता हैं। कृषि पर आधारित उद्योग वे होते हैं, जो कृषिउत्पादों को औद्योगिक उत्पादों में परिवर्तित कर देते हैं। जैसे चीनी, वस्त्र,कागज, तेल, इत्यादि। भारत में 13 मई 2020 केतहत लघु उद्योग में संशोधित किया हैं। इसके अंतर्गत निवेश 1 करोड़ से अधिक या 10 करोड़ से कम हो, व उसका टर्नओवर 5 करोड अधिक किन्तु 50 करोड से कमहो तो वह लघु उद्योग की श्रेणी माना जाता हैं। तथा मध्यम उद्योग के अंतर्गत निवेश 10 करोड़ से अधिक किंतु 20 करोड से कम हो व टर्नओवर 50 करोड़ से अधिक बल्कि 100 करोड़ से कम हो तो मध्यम उद्योग की श्रेणी में कहा गया हैं। लेकिन 1 जुलाई 2020 एम,एस,एम,ई के तहत निवेश 50 करोड़ तक व टर्नओवर 250 करोड़ तक किया हैं। ये उद्योग छोटे पैमाने के अंतर्गत आते हैं। ये उद्योग बड़े पैमाने के उद्योगों की तुलना में अलग होते हैं। क्योंकि पूंजी की मात्रा, रोजगार, उत्पादन, प्रबंध एवं निर्यात की स्थिति भिन्न प्रकार होती हैं।

शब्दकोश: *अर्थव्यवस्था, संरचना, विनियोजन, इकाइया, विनिर्माण, रोजगार, विकेंद्रीकरण।*

प्रस्तावना

भारत की अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्र का बहुत बड़ा योगदान हैं। भारत में लघुउद्योगों का औद्योगिक संरचना में महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। यह भारतीय अर्थव्यवस्था में प्राचीन काल से ही महत्वपूर्ण योगदान रखता हैं। ईस्ट इंडिया कंपनी तथा यूरोप की मशीनों की बनी वस्तुओं ने भारत के प्रसिद्व कुटीर उद्योगों को समाप्त कर दिया था।उसके बाद कुटीर उद्योग भारतीय कृषक को सहायक उद्योग के रूप में सहायता करते रहे हैं। इसके अलावा लाखों जुलाहै, बढई,लुहार इत्यादि कुटीर उद्योगों से अपनी रोजी रोटी कमाते रहे हैं। औद्योगिक क्रांति के परिणाम स्वरुप आधुनिक औद्योगिक के तहत भारत में आधुनिक उद्योगों की स्थापना 19वीं शताब्दी के मध्य शुरू हुई। प्रथम विश्व युद्ध के परिणाम स्वरूप कई उद्योगों का विशेष विकास हुआ। दूसरे विश्व युद्ध के समय भारत के औद्योगिक विकास के मार्ग में कई कठिनाइयां आयी। तथा दोनों महायुद्धों के बीच आजादी के पहले उद्योगों का सर्वाधिक विकास हुआ। भारत में इसके अंतराल कई कृषि पर आधारित उद्योग विकसित हुए हैं। ज्यादातर कृषि पर आधारित सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम श्रेणी के हैं। इन उद्योगों से भारत का लगभग 6प्रति ात आबादी को रोजगार मिला है। इन उद्योगों की अहम भूमिका रही है। भारत विश्व में सबसे तेजी से आगे बढ़ती अर्थव्यवस्था

* सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य), शासकीय छत्रसाल महाविद्यालय पिछोर, जिला शिवपुरी, मध्य प्रदेश।

में से एक हैं। जिसमें भारत का आर्थिक विकास की दृष्टि से कृषि पर आधारित लघु एवं मध्यम उद्योगों का महत्वपूर्ण स्थान हैं। कृषि पर आधारित लघु एवं मध्यम उद्योग करीबन उतने ही पुराने हैं, जितनीकृषि। कृषि लघु एवं मध्यम उद्योग के लिए मूलभूत हैं। जो न केवल लोगों को भोजन प्रदान करता है, लेकिन' उद्योगों को कच्चा माल भी प्रदान करता हैं।

कृषि पर आधारित लघु एवं मध्यम उद्योगों को चलाने हेतु विशेष कौशल की आवश्यकता कम होती है। इस तरह के उद्योगों में ना तो बहुत ज्यादा पूंजी विनियोजन की आवश्यकता पड़ती है, और न ही बहुत ज्यादा संख्या में श्रमिकों की। ये उद्योग बिजली और डीजल से चलते हैं। कृषि पर आधारित उद्योग वे हैं, जो कृषि उत्पादों को औद्योगिक उत्पादों में परिवर्तित कर देते हैं। जैसे वस्त्र चीनी, पटसन, तेल, कागज इत्यादि। जो देश के औद्योगिक उत्पादन का लगभग 40 प्रतिशत हैं। लघु उद्योग (छोटे पैमाने की औद्योगिक इकाइयां (Small Scale Industries) वे इकाइयां है। जो मध्यम स्तर से विनियोग की सहायता से उत्पादन प्रारम्भ करती हैं। इन इकाइयों में श्रम शक्ति की मात्रा कम होती है। और सापेक्षिक रूप से वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन किया जाता है।

लघु उद्योगों का वर्गीकरण तीन प्रकार विनियोजित राशि के मापदण्डों से किया जाता है। सूक्ष्म उद्योग, लघु उद्योग, मध्यम उद्योग, सरकार ने सर्वप्रथम लघु उद्योगों को परिभाषित इकाई में संयुक्त पूंजी तथा श्रमिकों की संख्या का आधार माना था। किन्तु बाद में श्रमिकों की संख्या की शर्त को हटा दिया गया। यह उद्योग अधिकांशतःस्वयं मालिक द्वारा या अपने परिवार के सदस्यों की सहायता चलाए जाते हैं। इसमें कम पूंजी लगती है। भारत में 13 मई 2020 से सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों की परिभाषा में संशोधन किया गया है। विनिर्माण एवं सेवा क्षेत्र दोनों के लिए निवेश और सालाना टर्नओवर तय किए गए हैं। सूक्ष्म उद्योग एक ऐसा उद्योग है। जिसमें एक करोड़ या इससे कम का निवेश हुआ हो और उसका टर्नओवर 5 करोड हो तो सूक्ष्म उद्योग की श्रेणी में माना जाएगा। लघु उद्योग वह उद्योग है। जिसमें निवेश 1 करोड़ से अधिक या 10 करोड़ से कम का हुआ हो और उसका टर्नओवर 5 करोड़ से अधिक एवं 50 करोड से अधिक ना हो तो लघु उद्योग की श्रेणी में आएगा। इनमें दाल की मिले, चावल, एवं आटे की मिलें, तेल पेरने की इकाइयां,पाव रोटी, बिस्किट एवं चॉकलेट, चटनी मुरब्बा, अचार बनाने की इकाई,घी, पनीर, मिठाई, मोमबत्ती व अगरबत्ती, बैग, पॉकेट, टोकरी, जूते, व पोलिस, तार, मसाले, वक्सेव अटैची झाड़ू, पेपर, लिफाफे, छोटी–छोटी औषधि, कृषि घरेलू तथा जानवरों हेतु उपयोगी औजार, पापड़, पलंग, अलमारी, कुर्सियां, बोर्ड रस्सी व धागे, रसोई के औजारव सामान, त्रिपाल, तोलिया, वस्त्र, बेल्ट निर्माण, छोटे खिलौने, स्कूल स्टेशनरी, पेपर, प्लेट निर्माण इत्यादि।

मध्यम उद्योग वह है, जिसमें निवेश 10 करोड़ से अधिक तथा 20 करोड़ से कम का निवेश हुआ हो और उसका टर्न ओवर 50 करोड़ से अधिक एवं 100 करोड़ से कम का हो तो मध्यम उद्योग की श्रेणी में माना जाएगा। लेकिन भारत सरकार ने 1 जून 2020 को एम,एस,एम,ई की परिभाषा में संशोधन मध्यम उद्योग के लिए निवेश 50 करोड रूपयेऔर टर्नओवर 250 करोड रूपये कर दिया गया है। इनमें आटा चक्की, साबुन निर्माण, टमाटर, सॉस निर्माण, रोस्टेड, राइस फ्लेक्स, केला, फाइबर, निष्कर्षण और बुनाई इत्यादि।

भारत में ग्रामोद्योग उत्पाद का निर्यात विश्व में अनेक देशों में किया जाता था। किंतु औपनिवेशिक शासन में इन उद्योगों का पतन हो गया। फलतः हमारे देश में ग्रामवासी गरीबी के कारण गांवों के विकास में ग्रामोद्योग का अपना महत्व है। तथा खादी और ग्रामोद्योग ग्राम के विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। साथ ही भारत की आर्थिक विकास में कृषि पर आधारित लघु एवं मध्यम उद्योगों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारत में कृषि पर आधारित लघु एवं मध्यम उद्योगों द्वारा उत्पादित वस्तुओं का निर्यात उत्तरोत्तर बढ़ रहा है। देश के कुल निर्यातों में लघु औद्योगक क्षेत्र का हिस्सा 34 प्रतिशत है। कृषि पर आधारित लघु एवं मध्यम उद्योग अपनी वस्तुओं का उत्पादन करके राष्ट्रीय उत्पादन में योगदान देते हैं। यदि इनके तकनीकी व उपकरणों में सुधार किया जाए तो उत्पादकता में भी सुधार किया जा सकता है। राज्य ग्रामोद्योग बोर्ड तथा ग्रामोद्योग उद्योग इन इकाइयां की स्थापना संचालन आदि में तकनीकी एवं आर्थिक सहायता प्रदान करते हैं।

कृषि पर आधारित लघु एवं मध्यम उद्योग का महत्व

भारत विकासशील देश है। देश के आर्थिक विकास में लघु उद्योगों की महत्वपूर्ण भूमिका हैं। भारत जैसे देश में पूंजी का अभाव गरीबी बेरोजगारी का साम्राज्य हैं। इसलिए लघु एवं मध्यम उद्योग बहुत उपर्युक्त हैं।

गांधीजी के अनुसार ''भारत का मोक्ष उसके कुटीर धंधे में निहित है।''

मोरारजी देसाई के अनुसार ''ऐसे उद्योगों से ग्रामीण लोगों को जहां अधिकांश समय बेरोजगार रहते हैं, पूर्व या अथवा अंशकालिक रोजगार प्राप्त होता है।''

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के अनुसार ''भारत गांवों का देश है, अतः सरकार को संतुलित अर्थव्यवस्था की दृष्टि से कुटीर तथा छोटे पैमाने के उद्योग के विकास को सर्वाधिक महत्व प्रदान करना चाहिए।''

छोटे उद्योग बड़ों उद्योग की तुलना में 4 गुनी लगभग लोगों को रोजगार दे रहे हैं।लघु उद्योगों के कुल उत्पादन भी बड़े उद्योगों के कुल उत्पादन के दुगने के लगभग हैं। लघु उद्योगों के लिए कम पूँजी, मामूली इमारत तथा कम मशीनों की आवश्यकता होती है। जिससे लघु उद्योग हमारे देश के लिए बहुत उपरोक्त हैं।

औद्योगिक क्रांति के लिए कृषि उत्पादनों में क्रांति बहुत आवश्यक है। अर्धविकसित देशों में कृषि उत्पादन की वृद्धि अनिश्चित है। ऐसी स्थिति में कृषि पर आधारित लघु उद्योगों को कच्चे माल की सुविधा आसानी से प्राप्त हो जाती है। इस तरह उद्योग पूरे देश में प्रत्येक क्षेत्र में फैले हुए रहते हैं। इसलिए क्षेत्र की यातायात कृषि औजार इत्यादि की आवश्यकताओं की संतुष्टि में अधिक समक्ष होते हैं। इन उद्योगों का क्षेत्र बड़े उद्योग की तुलना में अधिक कार्य कुशल रहे हैं। एवं लाभप्रदता भी अधिक रही हैं। कृषि पर आधारित लघु एवं मध्यम उद्योगों की सहायता से राष्ट्रीय आय का अधिक बेहतर नियोजित वितरण हो सकता है। और लोगों को आर्थिक विकास के फल प्राप्त करने में सहायता प्रदान करता हैं। इन उद्योगों में बिजली, तकनीकी ज्ञान तथा साख आदि सुविधाएं होने पर निष्क्रिय साधनों का उत्पादन कार्यो के लिए उपयोग होने लगता है।

सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्योगों को मिलाकर निर्यात का हिस्सा लगभग 40 प्रति ात है। जैसे रेशमी कलापूर्ण वस्त्र, चंदन की वस्तुएं, हरकरघें के वस्त्र, चमड़े के जूते, दरियावकालीन इत्यादि उत्पादित वस्तुओं के निर्यात से देश को विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है। कृषि पर आधारित लघु एवं मध्यम उद्योगों में विकेंद्रीकरण सरलता से हो जाती हैं। इन उद्योगों को दूरस्थ क्षेत्रों में सुविधानुसार आसानी से लगाए जा सकते हैं। इन उद्योगों में कलात्मक सुंदर वस्तुओं व कीमती वस्तुओं का उत्पादन किया जाता हैं। अतः इन उद्योगों में लोगों की मांग के अनुरूप उत्पादन में वृद्धि की गई। कृषि पर आधारित लघु एवं मध्यम उद्योग प्रबंध क्षेत्र व स्वरोजगार क्षेत्र में मार्गदर्शक के रूप में कार्य करते हैं। ये उद्योग नये उद्यमी व संवर्धन की दिशा में प्रेरित करती है। जिससे हमारे देश के आर्थिक विकास में अपना योगदान बढ़ा सकें।

पूर्व अध्ययनों की समीक्षा

अध्ययनों की समक्षी पुस्तकों एवं शोध आलेखों से किया गया है। जो प्रमुख हैं ।

डॉ. अरुण प्रसाद अमन (2020) ने – यह पाया है, कि भारत में लघु एवं कुटीर उद्योग में कच्चे माल की आसानी से उपलब्धता, कम पूंजी लगाकर उद्योगों को प्रारंभ करना, देश में उत्पादन और राष्ट्रीय आय में वृद्धि करना, निर्यात में बढ़ावा देना एवं बेरोजगारों को रोजगार करना उपरोक्त महत्वपूर्ण सहायक सिद्ध हुए हैं।

डॉ. जयराम सोलंकी (2020) ने पाया है, कि भारत में लघु एवं कुटीर उद्योगों की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। साथ ही बड़ी संख्या में रोजगार प्रदान कर राष्ट्रीय आय में वृद्धि एवं पूंजी अन्य संसाधनों में गति प्रदान करते हैं।

डॉ. अखिलेश कुमार (2020) ने पाया है, कि एम,एस,एम,ई क्षेत्र में भारत की सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक परिस्थितियों को देखते हुए। रोजगार सृजन, निर्धनता, निवारण, क्षेत्रीय विकास नवोन्मेष और बड़े उद्योगों की तुलना में कम पूंजी लागत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

शर्मा अशोक एवं कुमार (2011) ने अपने अध्ययन में पाया है, कि लघु एवं सूक्ष्म उद्योग के विकास में उचित प्रबंधन द्वारा कार्यरत पूंजी की उपलब्धता निर्यात एवं रोजगार सहायक सिद्ध होता है।

डॉ. देवेंद्र कुमार पांडे एवं आशीष सिंह (2017) ने यह पाया है, कि भारतीय अर्थव्यवस्था में वृद्धि दर देश की आर्थिक विकास एवं सामाजिक विकास लघु एवं मध्यम प्रकार के उपक्रमों की महत्वपूर्ण भूमिका है। साथ ही इन उद्योगों ने वित्तीय संसाधनों का उचित चयन करना, वित्त का सही प्रबंधन एवं नियंत्रण करना एवं लाखों लोगों को रोजगार प्रदान करने में सहायक सिद्ध हुए हैं।

दीक्षित एवं पांडे (2011) ने अपने अध्ययन में यह पाया है कि सन 1973–74 से वर्ष 2006–07 तक लघु उद्योगों में रोजगार घरेलू उत्पाद में वृद्धि एवं भारत में बढ़ती हुई बेरोजगारी पर नियंत्रण में अहम योगदान प्रदान किया है।

अध्ययन के उद्देश्य

- हमारे देश में कृषि पर आधारित लघु एवं मध्यम उद्योग की स्थिति के अध्ययन उद्देश्य पर आधारित हैं।
- कृषि पर आधारित लघु एंव मध्यम उद्योगों की भूमिकाका तथ्यपरक विश्लेषण किया गया है।
- हमारे देश में कृषि पर आधारित लघु एंव मध्यम उद्योग के विकास हेतु आवश्यक औद्योगिक क्रांति में सुझाव प्रस्तुत किये गये है।
- कृषि पर आधारित लघु एवं मध्यम उद्योग का अस्तित्व कायम रखने हेतु शासन नेसमय–समय पर नए–नए प्रयास किये हैं।

अध्ययन पद्धति

शोध कार्य में समंकों के संकलन का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रस्तुत शोध के अध्ययन हेतु शोध विधियों का चयन करना अत्यंत आवश्यक है। यह शोध आलेख अहम रूप से विवेचनात्मक, वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक, ऐतिहासिक एवं आलोचनात्मक अध्ययन पद्धति पर आधारित है। वर्तमान भारत में कृषि पर आधारित लघु एवं मध्यम उद्योग की भूमिका विविध क्षेत्रों या विविध पक्षों की अन्वेषण से संबंधित है। शोध आलेख द्वितीयक स्त्रोत के आधार पर किया गया है।जिसमें अध्ययन हेतु विभिन्न आचार्यों द्वारा संपादित पुस्तकों पत्र–पत्रिकाओं, जनरल वेबसाइटों हैं। एवं दस्तावेजों का उपयोग किया गया है।

कृषि पर आधारित लघु एवं मध्यम उद्योग में व्याप्त समस्या

हमारे देश में गावों की संरचना में काफी बदलाव आयाहैं। कृषि पर आधारित लघु एवं मध्यम उद्योगों को सही समय पर कच्चा माल उपलब्ध नहीं हो पाता है। तो इसी वजह बड़े उद्योगों से मुकाबला नहीं कर पाते हैं। और इन उद्योगों की स्थिति संकटग्रस्त है। अथवा समाप्त होते जा रहे हैं।

महात्मा गांधी ने ग्रामीण विकास के लिए सुझाव देकर सुझावों के अनुरूप कई नीतियां बनाई। किंतु क्रियान्वन होने से अपेक्षित लाभ नहीं मिल पाए हैं। भारत के कृषि पर आधारित लघु एवं मध्यम उद्योग में कार्य करने वाले मजदूर अकुशल, अशिक्षित तथा अप्रशिक्षित हैं। इसलिए वस्तुओं का उत्पादन निम्न श्रेणी की होती है। इसके अलावा इन उद्योगों में सबसे बड़ी समस्या यह है कि कच्चा माल को ऊंचे मूल्यों पर बाजार में खरीदना पड़ता है। जिसके कारण उत्पादन लागत बढ़ जाती है। दूसरी बड़ी समस्या यह भी होती है। कि कृषि पर आधारित लघु एवं मध्यम उद्योगपतियों के पास पूंजी का अभाव है। बे साहूकारों एवं बैंकों से ऊचें दर पर कर्ज लेकर अपनी आवश्यकता पूरी करते हैं। साथ ही उन्नत औजारों का अभाव होने पर उपयोग हेतु ऊंचे मूल्य पर खरीद नहीं सकते हैं। कृषि पर आधारित लघु एवं मध्यम उद्योगों के उत्पादन विधियां एवं पुराने औजार होते हैं। इसलिए नवीन डिजाइन की उत्तम वस्तुओं का उत्पादन नही कर सकते हैं। बहुत से कृषि पर आधारित लघु एवं मध्यम इकाइयां अस्वस्थ होती हैं। जिन्हें चला सकने की संभावना नहीं होती है। भारतीय के इन उद्योगों के पास बिक्री हेतु संगठन नहीं है ना ही मानक वस्तुओं का उत्पादन कर सकता हैं। इसलिए बड़े पैमाने की इकाइयों की तुलना में बड़ी मात्रा में वस्तुएं बिकती नहीं है।

कृषि पर आधारित लघु एवं मध्यम उद्योग के विकास का प्रयास

स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए गांवों में कृषि पर आधारित लघु एवं मध्यम उद्योगों की स्थापना पर बल दिया करते थे। केंद्रीय सरकार ने क्रमशः कृषि उद्योगों और भारी उद्योगों की स्थापना पर विशेष ध्यान दिया। और लघु उद्योगों के विकास के लिए अत्याधिक प्रयास किए गए। सन् 1948 में देश में कुटीर उद्योग बोर्ड की स्थापना हुई। राष्ट्रीय विकास की योजना बनाने एवं कार्यान्वित करने के लिए सन् 1950 में योजना आयोग का गठन किया गया था। जिसमें स्पष्ट किया है। लघु एवं मध्यम उद्योग हमारी अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण है। सन् 1950 में लघु उद्योग की लगभग 1600 इकाइयां थी। प्रथम पंचवर्षीय योजना काल में इनके विकास हेतु 48 करोंड रूपयें की राशि खर्च की गई। भारत में द्वितीय पंचवर्षीय योजना काल में लघु एवं मध्यम उद्योगों पर विशेष बल दिया गया। सन् 1951 के बाद उद्योगों की बहुत प्रगति हुई। किंतु चीन और पाकिस्तान के आक्रमणों के कारण लघु एवं मध्यम उद्योगों की प्रगति में अवरुद्ध हो गया था। युद्ध की समाप्ति के बाद लघु एवं मध्यम उद्योगों की उन्नति पर बल दिया गया। फिर वर्ष 1951, 1977, 1980, 1991, 2001 एवं 2016 में औद्योगिक नीतियों की घोषणाओंने लघु एंव कुटीर उद्योगों को प्रमुख स्थान दिया गया। इन औद्योगिक नीति में लघु उद्योगों की प्रगति हुई इससे देश में बेरोजगारी को दूर करने तथा अर्थव्यवस्था को सुधारने में मदद मिली। वर्ष 1972 में भारत में 1.40 लाख लघु उद्योगों की इकाइयां थीं। जिसमें 16.53 लाख लोगों को रोजगार मिला था। और निर्यात 127 करोड रूपयें का किया गया था।सन् 1988 में भारत में 5.82 लाख इकाइयां कार्यरत थी। जिसमें बढ़कर 36.66 लाख इकाइयां तक पहुंच गए। और निर्यात में बढ़कर 2499 करोड हो गये हैं। वर्ष 2002–2003 में लघु उद्योगों में कार्यरत लोगों की संख्या 263.7 लाख थी। जो वर्ष 2007–2008 में बढ़कर 322.7 लाख हो गई है। तथा वर्ष 2009–10 में मध्यम उद्योगों सहित 695 लाख कार्यरत लोगों की संख्या रही। वर्ष 2010–11 में लघु उद्योगों की कुल 311.5 लाख में उत्पादन 10,95,758 करोड रूपये का किया गया। जिसमें बढ़कर कार्यरत लोग 732.17 लाख पर पहुॅंच गई।

सत्र 2012–13 के अनुसार पंजीकृत इकाइयां 467.6 लाख हैं। जिसमें 1061.5 लाख लोगों को रोजगार मिला। केंद्र सरकार के मंत्रालय एम,एस,एम,ई के तहत कई नीतिया बनाई गई हैं। जो ग्रामीण भारत में कृषि पर आधारित लघु एवं मध्यम उद्योगों के विकास में सहायक सिद्ध हो रहा हैं। राष्ट्रीय सर्वे 2015–16 के अनुसार एम,एस,एम,ई क्षेत्र में लगभग 633.28 लाख इकाइयां कार्यरत हैं। इन इकाइयों में 1.10 करोड़ रोजगार सृजित किए गए हैं अतः रोजगार एवं निर्यात की संभावना को देखते हुए सरकार ने लघु उद्योगों के विकास के लिए आवंटन में सातवीं योजना के मुकाबले में आठवीं योजना में चौगुनी वृद्धि की है। अतः उक्त ऑकडों में लघु एंव मध्यम उद्योग की इकाइयों का समावेश किया गया हैं।

निष्कर्ष

भारत में कृषि पर आधारित लघु एवं मध्यम उद्योगों का अर्थव्यवस्था के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका रही हैं। कृषि पर आधारित लघु एवं मध्यम उद्योगों में कम पूंजी की आवश्यकता होती हैं, जिससे इन उद्योगों को प्रारंभ सुविधाजनक किया जा सकता है। क्योंकि शासन की योजनाओं से छोटे–छोटे ऋणों की सुविधा प्राप्त हो जाती है। साथ ही इन उद्योगों को कच्चे माल आसानी से प्राप्त हो जाता हैं। अतः कृषि पर आधारित लघु एवं मध्यम उद्योगों में न्यूनतम लागत लगाकर अधिक उत्पादन किया जा सकता हैं। और बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार प्रदान कराया जा सकता हैं। इन उद्योगों से प्रति व्यक्ति की आय एवं राष्ट्रीय आय में वृद्धि की जा सकती हैं। जिससे संपत्ति की असमानताओं को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं भारत में कृषि पर आधारित लघु एवं मध्यम उद्योगों द्वारा उत्पादित वस्तुओं में महत्वपूर्ण स्थान रखता हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ. जयप्रकाश मिश्रा (2009)''कृषि अर्थशास्त्र'' साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा
2. डॉ. अरविंद पाल सिंह (1973) ''भारतीय अर्थव्यवस्था'' मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल ((310–333)

3. डॉ. शशि किरण नायक, श्रीमती अनुष्का मिश्रा एवं डॉ. रोहिणी त्रिपाठी (2021)''औद्योगिक अर्थशास्त्र'' मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल ((173–186)

4. डॉ. ऋतु तिवारी (2021)''भारतीय अर्थव्यवस्था'' मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल (138–147)

5. वी. सी. सिन्हा (2009)''औद्योगिक अर्थव्यवस्था'' लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद नई दिल्ली, पटना (752–765)

6. डॉ. अरुण प्रसाद अमन (2020) '' भारत में लघु एंव कुटीर उद्योगों की स्थितिका एक विवेचनात्मक अशीलन। 2020 International journal of Applied research में 6(10) 74–77

7. डॉ. देवेंद्र प्रसाद पांडे एवं आशीष सिंह (2017) ''लघु एवं मध्यम उद्योग के व्यापार में वित्तीय प्रबंधन'' नवीन शोध संसार International Journal of Research Volume I Issue X VIII April To June 2017 (90–92)

8. डॉ. जयराम सोलंकी (2020)'' भारतीय अर्थव्यवस्था में लघु एवं कुटीर उद्योगों की भूमिका का प्रभावः विश्लेषणात्मक अध्ययन'' Naveen Shodh Sansar International journal Research Volume I Issue XXXI Oct. To Dec.

9. डॉ. अखिलेश कुमार (2020) ''भारत में सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्योगों की वर्तमान स्थिति व चुनौतियों का एक अध्ययन''(2020) IJCRT Volume 8 Issue 9 September 2020

10. https://www.dourtnat.com

11. https://khatabook.com

12. https://liveinhindi.com

13. https://www.ikamal.in

14. https://hindiindiawaterportal.org

15. https://www.tractorjunction.com

16. https://dailyhant.in.india.

❖◆❖